SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

विष्णुगढ़ प्रखंड में मानव प्रवसन के मुख्य कारण

ओम प्रकाश महतो, पी.–एचडी., **कुमारी श्रेया लक्ष्मी,** शोधार्थी, भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
ओम प्रकाश महतो, पी.–एचडी.
कुमारी श्रेया लक्ष्मी, शोधार्थी,
E-mail : laxmishreya07@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/07/2025
Revised on : 05/09/2025
Accepted on : 14/09/2025
Overall Similarity : 02% on 06/09/2025

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में हजारीबाग जिले के अंतर्गत विष्णुगढ़ प्रखंड के में हो रहे मानव प्रवसन के मुख्य कारणों को सम्मिलित किया गया है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत हो रहे मानव प्रवचन के मुख्य कारणों को जानना है। प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग कर मानव प्रवसन के मुख्य कारणों की प्राप्ति की गई है। साक्षात्कार तथा अवलोकन का उपयोग प्राथमिक आंकड़ों के अंतर्गत किया गया है तथा द्वितीयक आंकड़ों में सरकारी तथा गैर सरकारी विधि का प्रयोग किया गया है। इस पत्र द्वारा यह प्रतीत होता है कि विष्णुगढ़ प्रखंड में मानव प्रवसन क्रिया सबसे प्रमुख तथा ज्वलंत क्रियाओं में से एक है। इस प्रखंड में मानव प्रवसन के मुख्य कारण को देखें तो वह है रोजगार के अवसरों की कमी, कृषि भूमि की कमी शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, प्राकृतिक आपदाएं जैसे सूखा, ओला वृष्टि, भूमि क्षरण आदि सामाजिक तथा पारिवारिक कारण, आधुनिकता तथा शहरी आकर्षण इत्यादि है। इस पत्र के अंतर्गत द्वारा हम यह समझ सकते हैं कि विष्णुगढ़ प्रखंड में गरीबी, रोजगार की कमी, जनसंख्या मुताबिक कृषि भूमि की कमी, यहां के निवासियों को प्रवसन के लिए मजबूर करती है। ना चाहते हुए भी यहां की जनसंख्या जीविकापार्जन के लिए प्रवसन करने के लिए विवश है।

मुख्य शब्द

प्रवसन, आर्थिक, सामाजिक, जनसंख्या.

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण जीवन का सीधा संबंध भूमि, जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों से होता है। ग्रामीण जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अपनी जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है लेकिन समय के साथ

कृषि भूमि का विखंडन, रोजगार की कमी और प्राकृतिक आपदाओं ने ग्रामीण जनता को मजबूर किया कि वे अपने मूल स्थान को छोड़कर दूसरे क्षेत्रों की ओर पलायन करें। यही प्रक्रिया प्रवसन कहलाती है।

झारखंड राज्य के हजारीबाग ज़िले के विष्णुगढ़ प्रखंड में प्रवसन एक सामान्य सामाजिक–आर्थिक परिघटना के रूप में देखने को मिलती है। यहाँ के लोग आजीविका की खोज में बड़े शहरों, यहाँ तक कि दूसरे राज्यों की ओर भी प्रस्थान कर रहे हैं। यह प्रवसन केवल आर्थिक समस्या का परिणाम नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक असमानता और प्राकृतिक चुनौतियों से भी जुड़ा हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र

भारत के पूर्व में झारखंड राज्य स्थित है। झारखंड राज्य के उत्तरी मध्य हिस्से में हजारीबाग जिला स्थित है, हजारीबाग के पूर्व में विष्णुगढ़ प्रखंड स्थित है। विष्णुगढ़ प्रखंड पश्चिम में चुरचू सदर हजारीबाग और इचाक प्रखंडों के सीमाओं से घिरा हुआ है। दक्षिण में रामगढ़ जिला, दक्षिण पूर्व में बोकारो जिला, उत्तर पूर्व में गिरिडीह ^{0}01′27″ उत्तरी अक्षांश से लेकर उत्तरी अक्षांश एवं 85^{0}44′25″ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित यह प्रखंड हजारीबाग के मुख्यालय से 40 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व में स्थित है। इसी प्रखंड के मध्य से राष्ट्रीय मार्ग 522 गुजरती है। इस प्रखंड का कुल क्षेत्रफल 51954.55 हेक्टेयर है जो हजारीबाग जिले के कुल क्षेत्रफल का 12 प्रतिशत है 2011 जनगणना के अनुसार इस प्रखंड का कुल जनसंख्या 182917 है। इस प्रखंड में 28 पंचायत एवं गांव की संख्या 139 है।

विष्णुगढ़ प्रखंड का परिचय

हजारीबाग ज़िले का विष्णुगढ़ प्रखंड भौगोलिक दृष्टि से ग्रामीण और वनाच्छादित क्षेत्र है। यहाँ की जनसंख्या मुख्यतः आदिवासी और कृषक समुदाय से आती है।

- **मुख्य जीविका का साधनः** कृषि और वनोपज।
- **कृषि की स्थितिः** वर्षा पर आधारित, सिंचाई के पर्याप्त साधन नहीं।
- **आर्थिक स्थितिः** कृषि से पर्याप्त आमदनी का न होना।
- **शिक्षा और स्वास्थ्यः** प्राथमिक स्तर पर ही सीमित, उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ बहुत कम है (सिर्फ प्रखंड मुख्यालय के आस–पासृ)।
- **प्राकृतिक परिस्थितियाँः** कभी सूखा, कभी अधिक वर्षा, ओलावृष्टि, और भूमि का कटाव।

प्रवसन की परिभाषा और प्रकार

प्रवसन का अर्थ है जब कोई व्यक्ति या परिवार किसी कारणवश अपने निवास स्थान को छोड़कर अस्थायी या स्थायी रूप से किसी अन्य स्थान पर जीवनयापन करने के लिए चला जाता है।

प्रवसन के प्रकार

- आंतरिक प्रवसन (भूखंडे से शहर या राज्य के भीतर)।
- बाहरी प्रवसन (एक राज्य से दूसरे राज्य या विदेश तक)।
- अस्थायी प्रवसन (मौसमी काम के लिए कुछ महीनों तक)।
- स्थायी प्रवसन (नए स्थान पर स्थायी रूप से बस जाना)।

विष्णुगढ़ में ज्यादातर लोग आंतरिक व अस्थायी प्रवसन करते हैं, जैसे बिहार, बंगाल, दिल्ली, पंजाब, महाराष्ट्र आदि में जाकर मजदूरी करना।

विष्णुगढ़ प्रखंड में प्रवसन के प्रमुख कारण

(क) कृषि भूमि की कमी

विष्णुगढ़ प्रखंड में कृषि भूमि सीमित है। पीढ़ी दर पीढ़ी भूमि का बंटवारा होने के कारण हर किसान के पास बहुत छोटी जोत बचती है। इस छोटी जोत से परिवार का भरण–पोषण करना कठिन हो जाता है।

(ख) रोजगार के अवसरों की कमी

यहाँ उद्योग, फैक्ट्री या बड़े पैमाने पर रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं हैं। गाँवों में खेती के अलावा मजदूरी ही एकमात्र विकल्प है। इसी कारण लोग रोजगार की तलाश में बड़े शहरों की ओर जाते हैं।

(ग) शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव

प्रखंड के अधिकांश गाँवों में प्राथमिक विद्यालय तो हैं, लेकिन उच्च शिक्षा संस्थान और व्यावसायिक शिक्षा केंद्र नहीं हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की भी कमी है। अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए लोग बच्चों को लेकर शहरों की ओर पलायन करते हैं।

(घ) प्राकृतिक आपदाएँ

- यह क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त रहता है।
- सूखा पड़ने पर खेती बर्बाद हो जाती है।
- ओलावृष्टि और अधिक वर्षा से फसल नष्ट हो जाती है।
- भूमि कटाव और वनों की कटाई से उपजाऊ भूमि कम हो रही है।

इन परिस्थितियों में किसान मजबूरीवश पलायन करते हैं।

(ङ) सामाजिक व पारिवारिक कारण

कई बार लोग विवाह, पारिवारिक विवाद, जातिगत भेदभाव और सामाजिक दबावों के कारण भी गाँव छोड़कर नए स्थानों की ओर चले जाते हैं।

(च) आधुनिकता और शहरी आकर्षण

शहरों में अच्छी शिक्षा, आधुनिक जीवनशैली, स्वास्थ्य सेवाएँ, और रोज़गार के अवसर ग्रामीण युवाओं को अपनी ओर खींचते हैं। युवा पीढ़ी शहरों में जाकर नए रोजगार की शुरुआत करते हैं।

प्रवसन के सामाजिक प्रभाव

- गाँवों की जनसंख्या में सापेक्ष रूप से कमी आ जाती है।
- बुजुर्ग और महिलाएँ ही गाँव में रह जाते हैं।
- पारिवारिक विखंडन और बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है।
- सामाजिक परंपराएँ कमजोर होने लगती हैं।

प्रवसन के आर्थिक प्रभाव

- गाँवों में श्रमशक्ति की कमी हो जाती है।
- कृषि उत्पादन घट जाता है।
- जो लोग बाहर जाते हैं, वे पैसे भेजकर परिवार की मदद करते हैं, इससे गाँव की आर्थिक स्थिति में सुधार भी होता है।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था कमजोर होती है।

प्रवसन के सांस्कृतिक प्रभाव

- पारंपरिक त्योहारों, रीति–रिवाजों में कमी आ जाती है।
- नई संस्कृति और आधुनिक जीवनशैली गाँव में प्रवेश करती है।
- सांस्कृतिक मिश्रण से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ते हैं।

प्रवसन से उत्पन्न चुनौतियाँ

- गाँवों में कृषि और श्रमिकों की कमी।
- बच्चों की शिक्षा में रुकावट।
- महिलाओं और बुजुर्गों पर बोझ।
- गाँवों की सामाजिक एकजुटता में कमी।
- प्रखंड में बेरोजगारी की समस्या।

प्रवसन की रोकथाम एवं समाधान

- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाना।
- छोटे उद्योग और हस्तशिल्प को बढ़ावा देना।
- सिंचाई सुविधा और आधुनिक खेती के साधन उपलब्ध कराना।
- शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार।
- सरकार की मनरेगा जैसी योजनाओं का सशक्त क्रियान्वयन।
- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।

निष्कर्ष

विष्णुगढ़ प्रखंड में प्रवसन केवल एक सामाजिक या आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह वहाँ की संपूर्ण जीवनशैली और संरचना को प्रभावित करती है जिसके पीछे मुख्य कारण हैं कृषि भूमि की कमी, रोजगार की अनुपलब्धता, प्राकृतिक आपदाएँ और शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव इत्यादि। यदि सरकार और समाज मिलकर रोजगार, शिक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के विकास की दिशा में ठोस कदम उठाएँ, तो प्रवसन की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. देसाई, ए. आर. (1981) *भारतीय समाजशास्त्र में ग्रामीण–शहरी प्रवसन,* लोकप्रिय प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, के. एस. (1998) *जनजातीय समाज और प्रवासन,* मानवशास्त्र सर्वेक्षण, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. शर्मा, एच, एल, (2012) *भारत में ग्रामीण से शहरी प्रवसनः कारण और परिणाम,* रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. Mukherjee, R. (2015) *Migration and Development in India,* Sage Publications, New Delhi.
5. Chandna, R. C. (2006) *Geography of Population: Concepts, Determinants and Patterns*, Kalyani Publishers, New Delhi.
6. Todaro, M. (1969) A Model of Labor Migration and Urban Unemployment in Less Developed Countries, *American Economic Review,* 59(1): 138–148.

7. Harris, J. R. & Todaro, M. P. (1970) Migration, Unemployment and Development: A Two-Sector Analysis, *American Economic Review,* 60(1): 126–142.
8. Srivastava, R. (2011) Internal Migration in India: Recent Trends and Patterns, *Economic and Political Weekly,* 46(24): 168–176.
9. Keshri, K. & Bhagat, R. B. (2012) Temporary and Seasonal Migration in India, *Genus,* 68(3): 25–45.
10. Deshingkar, P. & Farrington, J. (2009) Circular Migration and Multilocational Livelihoods in Rural India, Oxford University Press, New Delhi.
11. भारत सरकार (2011) जनगणना रिपोर्ट, 2011, रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली।
12. नीति आयोग (2020) भारत में आंतरिक प्रवसन की स्थिति पर रिपोर्ट, नई दिल्ली।
13. International Organization for Migration (IOM) (2022) World Migration Report 2022, IOM, Geneva.
14. UNESCO (2013) Internal Migration in India Initiative, UNESCO Office, New Delhi.
15. झारखंड सरकार (2021) हजारीबाग जिला सांख्यिकी विवरणिका, जिला सांख्यिकी कार्यालय, रांची।
16. झारखंड राज्य सरकार (2020) विष्णुगढ़ *प्रखंड विकास योजना,* ग्रामीण विकास विभाग, रांची।
17. हजारीबाग जिला परिषद् (2019) *जिला वार्षिक रिपोर्ट,* जिला परिषद् कार्यालय, हजारीबाग।

****